



SHRI MITRABHANU GOUNTIA

Shri Mitrabhanu Gountia is one of the most reputed and distinguished dramatists, poets, lyricists, epic writers, novelists, folk play writers and lyrical play writers who has contributed a lot to the sambalpuri literature & language. He is highly regarded for his command over colloquial language of western Odisha, Sambalpuri. The most popular world famous Sambalpuri lyrics "RANGABATI" has made him extremely popular at national & international level.

2. Born on 17th March, 1942 in a remote village Bilung of Sambalpur district, Odisha, Shri Gountia started his literary activities at the tender age of 15 by composing poem "Masa Odasa Kali" and "Parikshya Chinta". Later on, his creation of Rangabati lyric made him world famous which has stirred the heart and soul of the millions of the people not only in India but also across the globe. He has been writing in tribal language Sambalpuri for last 60 years. Through his valuable creations and outstanding contributions Shri Gountia has enriched and has given a new life to the Sambalpuri literature and language. His world famous song "Rangabati", lyrical plays like Jharbania, Rakshya Kabacha, Pakhal Khuri Thi Mahara, Jeein Thile Jeebika, Gaon Amar Maa, Mahisa Nasini, Khai Unjula, Jhee Ratan etc. and epics like Malli, Lalita, Mohini, Kaeri are few of his valuable contribution to the Sambalpuri literature.

3. Through his plays Shri Gountia has been giving a message to the humanity about deforestation, to save forest, environment, pollutions, art & culture, educations, literacy, to save girl child, woman education etc. He also depicts a clear cut picture about traditions, customs, marriages and life style of the oldest tribes dwelling in the forest land are located in his folk plays like Tale Tale Jiban, Guhal Biha, Gudna, Haelu, Silpa Pasara, Kisan Jibanara Prabaha, Sangeet Rupak Khadia etc. Some of his famous immortal songs are Rangabati Go Rangabati, Tetel Patar Suru Suru, Kane Chabe Kan Kuturu, Tui Nuru Thilu Nuri Nuri Mui, Dal Khai, Rasar Keli, Maila Jada etc. Because of his world famous lyric Rangabati, the Revenue Department of Odisha has initiated by taking steps for making the lyric Rangabati immortal by changing the name of his village Bilung to "rangabati Bilung". Two local trains in Sambalpur and Kantabanji line and Rourkela to Puri line have also been named as "Rangabati Passenger" and "Rangabati Express" which shows that his song Rangabati has become a sort of identity for the people of his region.

4. Shri Gountia has received various honours and awards including honorary titles like Loka Kabi, Kabi Brahma, Ranga Kabi Ratna, Kabi Sourava, Geeti Mitra etc. He was awarded Akashvani national award in 2001, 2010, 2011, 2012, 2013; Rangabati Sanman in New Delhi in 2017; Kimbadanti Purusa sanman in 2009; Odisha State Sangeet Natak award for his remarkable work in the field of music by the Government of Odisha in the year 2003; Odisha State Teachers award in the year 1997 etc.





श्री मित्रभानु गौन्तिआ

श्री मित्रभानु गौन्तिआ एक बहुत प्रतिष्ठित और विशिष्ट रंगकर्मी, कवि, गीतकार, महाकाव्य लेखक, उपन्यासकार, लोक नाट्य लेखक और काव्य नाटक लेखक हैं जिन्होंने संबलपुरी साहित्य और भाषा में बहुत योगदान दिया है। पश्चिमी उड़ीसा की संबलपुरी बोली के ज्ञान के लिए उन्हें अत्यधिक सम्मानित किया जाता है। एक बहुत ही लोकप्रिय, विश्व प्रसिद्ध संबलपुरी गीत रंगबाती ने उन्हें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेहद लोकप्रिय बना दिया है।

2. 17 मार्च, 1942 को उड़ीसा के संबलपुर जिले के एक सुदूर गांव बिलूंग में जन्मे श्री गौन्तिआ ने 15 वर्ष की छोटी सी आयु में मासा ओडासा काली और परिक्षिया चिंता कविताएं रचकर साहित्यिक कार्य शुरू किया। बाद में रंगबाती गीत की रचना ने उन्हें विश्व प्रसिद्ध बना दिया। इस कविता ने न केवल भारत बल्कि दुनिया के लाखों लोगों के दिल और दिमाग में हलचल मचा दी। वह विगत 60 वर्ष से जनजातीय भाषा संबलपुरी में लिख रहे हैं। अपने बहुमूल्य सृजन और उल्लेखनीय योगदान के जरिए श्री गौन्तिआ ने संबलपुरी साहित्य और भाषा में नए प्राणों का संचार कर दिया है। उन्होंने विश्व प्रसिद्ध गीत रंगबाती, झरबानिया, रक्ष्या कबाचा, पाखल खुरी थी महारा, जींन थिले जीबिका, गांव अमार मां, महिसा नासिनी, खाइ उनजुला, झी रतन आदि काव्य नाटकों ने और मल्ली, ललिता, मोहिनी, कायेरी जैसे महाकाव्यों के द्वारा संबलपुरी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

3. श्री गौन्तिआ अपने नाटकों के माध्यम से अवनीकरण, वनों को बचाने, पर्यावरण, प्रदूषण, कला एवं साहित्य, शिक्षा, साक्षरता, बालिका बचाने, महिला शिक्षा आदि के बारे में मानवता को संदेश दे रहे हैं। उन्होंने प्राचीन वनवासी जनजातियों की परंपराओं, रीति–रिवाजों, विवाह और जीवनशैली का सफल चित्रण किया है और अपने लोक नाटकों ताले ताले जीबन, गुहाल बिहा, गुदना हाएली, सिल्पा पसारा, किसान जीबनरा प्रभा, संगीत रूपक खड़िया आदि में स्थान दिया है। उनके मशहूर कालजयी गीत रंगबाती गो रंगबाती, तेतेल पतारा सुरु सुरु, काने छाबे कान कुतरू, तुई नुरु थीलू नुरी नुरी मुई, दाल खाई, रसर केलि, मैला जडा आदि उनके कुछ अमर गीत हैं। अपने विश्व प्रसिद्ध गीत रंगबाती के कारण उड़ीसा के राजस्व विभाग ने उनके गांव बिलूंग का नामकरण रंगबाती बिलूंग करके उनके गीत रंगबाती को कालजयी बना दिया है। संबलपुर और कांताबंजी तथा राउरकेला से पुरी जाने वाली दो स्थानीय रेलों का नाम भी रंगबाती पैसेंजर और रंगबाती एक्सप्रेस कर दिया गया है। इससे ज्ञात होता है कि उनका गीत रंगबाती इस क्षेत्र के लोगों की खास पहचान बन चुका है।

4. श्री गौन्तिआ ने अनेक सम्मान और पुरस्कार प्राप्त किए हैं, जिनमें लोक कबि, कबि ब्रह्मा, कबि रत्ने, कबि सौरव गीति मित्र आदि सम्मान शामिल हैं। उन्हें वर्ष 2001, 2010, 2011, 2012, 2013 का आकाशवाणी का राष्ट्रीय पुरस्कार; वर्ष 2017 में नई दिल्ली में रंगबाती सम्मान; वर्ष 2009 में किम्बदंती पुरुष सम्मान; वर्ष 2003 में उड़ीसा सरकार द्वारा संगीत के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय कार्य के लिए ओडिशा राज्य संगीत नाटक पुरस्कार; वर्ष 1997 में उड़ीसा राज्य शिक्षक पुरस्कार भी प्रदान किया गया है।